

टेलेंट मंजरी-7

(1) दीवानों की हस्ती

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

- (क) कवि ने 'दीवानों' शब्द का प्रयोग स्वतंत्र भाव से जीवन जीने वाले मस्त व्यक्तियों के लिए किया है।
(ख) इस कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि हम सभी को अपना जीवन हमेशा स्वतंत्र भाव से जीना चाहिए।
(ग) इस कविता में हमें सबसे अच्छी बात यह लगी कि हम सभी आगे बढ़ते हुए दो बात कहते हैं और दूसरों की दो बात सुनते हैं। कुछ हँसते हैं और कुछ रोते हैं।

ऐसा हम इसलिए करते हैं क्योंकि समाज में एक दूसरे का सुख-दुःख के घूंटों को पीने से सुख में वृद्धि होती है और दुःख भी बँट जाता है।

(घ) कवि ने अपने आने को 'उल्लास' इसलिए कहता है क्योंकि वह प्रसन्नतापूर्वक कुछ अच्छा करना चाहता है और अपने जाने को 'आँसू बनकर बहकर जाना' इसलिए कहता है क्योंकि सभी कहते हैं कि, अरे, तुम कैसे आए और कहाँ चले।

(2) निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए—

- (क) मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले।
(ख) दो बात कहीं, दो बात सुनीं, कुछ हँसे और फिर कुछ रोए।
(ग) हम एक निसानी-सी उर पर, ले असफलता का भार चले।
(घ) हम स्वयं बँधें थे और स्वयं, हम अपने बंधन तोड़ चले।

(3) सोच-समझकर बताइए—

- (क) 'दीवानों की हस्ती' नामक कविता के रचयिता 'श्री भगवती चरण वर्मा जी' हैं।
(ख) कविता में कवि संसार से कुछ लेने की बात कह रहा है।
(ग) कवि ने यह दुनिया भिखमंगों की बताई है।

(4) सही विकल्प (✓) का चिह्न लगाइए—

- (क) सफलता (ख) (i) प्रेम (ग) (i) हैसियत

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए।

(6) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

उल्लास—अप्रसन्नता, प्यार—नफरत

पराया—अपना, स्वतंत्र—परतंत्र

दुःख—सुख, तोड़ना—जोड़ना

(7) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए—

दिवाना—दीवानी, मस्ति—मस्ती

सूख—सुख, दूनीयाँ—दुनिया

आशूँ—आँसू, आवाद—आबाद

(8) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—

दीवाना—पागल, मस्त उल्लास—प्रसन्नता, खुशी

हस्ती—हैसियत, ताकत स्वच्छंद—आजाद, स्वतंत्र

आलम—दशा, स्थिति दुनिया—संसार, जग

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(2) एनीबेसेंट

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) सन् 1857 के विद्रोह को जिसे अंग्रेजों ने विद्रोह (गदर) कहा— इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट में तूफान मचा दिया। अंग्रेज किसी भी दशा में 'सोने की चिड़िया' को हाथ से नहीं निकलने देना चाहते थे।

(ख) एनीबेसेंट की पुस्तक का नाम, 'इंग्लैण्ड, इण्डिया ऐंड अफगानिस्तान' था। यह पुस्तक 1879 में पहली बार लंदन में प्रकाशित हुई थी।

(ग) एनीबेसेंट का जन्म लंदन में अक्टूबर 1847 में हुआ था। उनके बचपन का नाम एनीवुड था। वह अपने आपको आयरिश कहलाना अधिक पसंद करती थीं, क्योंकि उनकी माँ आयरिश थी। एनी अपनी माँ से बहुत प्यार करती थीं। एनी के पिता एक बड़े विद्वान थे। उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान था। जब एनी केवल पाँच वर्ष की थी तो उनके पिता की मृत्यु हो गयी।

दिसंबर 1867 में एक पादरी पैइंक बेसेंट के साथ एनी का विवाह हुआ। पति-पत्नी की इच्छाओं और भावनाओं में जमीन-आसमान का अंतर था। फिर भी जीवन जैसे-तैसे चलता रहा। वह दो बच्चों की माँ भी बन गई, परंतु दोनों बच्चे निरंतर बीमार रहने लगे। सन् 1873 ई. में केवल 26 वर्ष की आयु में एनीबेसेंट घर से निकाल दी गई और वह सच्चाई की खोज में आगे बढ़ चली।

(घ) भारत के बारे में एनी ने यह सोचा कि भारतवासी जब तक पूरी तरह शिक्षित नहीं हो जाएँगे, तब तक वे परतंत्रता की बेड़ियाँ नहीं तोड़ सकेंगे।

(ङ) धर्म के बारे में एनी कहती थी कि धर्म तो परमात्मा तक पहुँचने का माध्यम है। जैसे नदियाँ समुद्र में जा मिलती हैं, वैसे धर्म भी प्रभु के प्राप्ति का मार्ग हैं।

(2) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए—

- (क) विद्रोह (ख) इंग्लैण्ड, इंडिया ऐंड अफगानिस्तान
(ग) थियोसोफिकल (घ) शिक्षा

(3) सोच-समझकर बताइए—

- (क) एनी बेसेंट का जन्म अक्टूबर, 1847 में हुआ।
(ख) एनी बेसेंट का जन्म लंदन में हुआ।
(ग) सन् 1874 में एनीबेसेंट चार्ल्स ब्राडलेघ की एक संस्था 'नेशनल सेक्यूलर सोसायटी' में शामिल हुई
(घ) एनी बेसेंट की मृत्यु 20 दिसंबर 1933 में हुई।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

- (क) (ii) सन् 1853 में, (ख) (i) सन् 1879 में,
(ग) (i) लंदन, (घ) (i) सन् 1867 में

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) वाक्यांशों को जोड़कर बनाइए—

- (क) उन्हीं दिनों एनीबेसेंट ने एक पुस्तक लिखी।
(ख) अक्टूबर 1847 में लंदन में एक बच्ची का जन्म हुआ।
(ग) एनी की माँ उसे हैरो स्कूल में पढ़ाना चाहती थी।
(घ) 1889 का वर्ष उनके जीवन के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ।

(7) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

महत्वपूर्ण—जरूरी, आवश्यक विवाह—शादी, प्रणय
माध्यम—जरिया, पथ समुद्र—सागर, जलोधी
विश्व—संसार, जग विचलित—परेशान, दुःखी
दृश्य—घटनास्थल, दर्शनीय अर्पित—समर्पित, देना

(8) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताते हुए इनका वाक्य में प्रयोग कीजिए—

- (*) दशा—(स्थिति)—गरीबों से अमीरों की दशा अच्छी होती है।
(*) धिनौना—(घृणित)—धिनौना भिखारी भी प्रेमपूर्वक व्यवहार चाहता है।
(*) सहायता—(मदद)—हमें जरूरतमंद की सहायता करनी चाहिए।
(*) बहुमूल्य—(बेशकीमती)—शिक्षित व्यक्ति किसी भी प्रकार के बहुमूल्य वस्तुओं पर ध्यान नहीं देते।
(*) प्रणाली—(प्रक्रिया)—शिक्षा प्रणाली सर्वश्रेष्ठ प्रणाली होती है।

(3) तात्या टोपे

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) सैनिकों के न होते हुए भी तात्या टोपे अंग्रेजों से इसलिए टक्कर लेना चाहते थे क्योंकि उनका मानना था कि सफलता से ही प्रत्येक बात को तौला नहीं जाता। वे सोचते थे कि यदि हम सौ-सौ आदमी कुछ नहीं कर सकते, तो घर लौटकर भी हम क्या कर लेंगे? इससे तो अच्छा है कि हम एक उदाहरण प्रस्तुत कर जाएँ, जिससे बाद में स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ने वाले प्रेरणा लें। तात्या टोपे गीता के उस वचन में विश्वास करते थे कि लड़ते हुए मरेंगे तो स्वर्ग प्राप्त होगा और यदि जीत जाएँगे तो स्वतंत्र भारत के दर्शन होंगे। किसी दशा में भी हमें अपने झंडे को झुकाना नहीं चाहिए।

(ख) सरदार को असफल होने का डर इसलिए सता रहा था क्योंकि इस समय अंग्रेजों की चलती है और भारतीयों में एकता नहीं है। इसलिए सफलता की आशा बहुत थोड़ी है।

(ग) तात्या टोपे भारतीय जनता का सहयोग इसलिए चाहते थे क्योंकि वे गोरों को सागर पार करवाना चाहते थे।

(घ) सैनिकों के हतोत्साहित होने का कारण यह था कि कई दिनों से भागते-भागते ये बुरी तरह थक गए थे और अब वे भाग भी नहीं सकते। और सबसे बड़ी बात कि शत्रु सेना के पास चार तोपें भी थीं। और सैनिकों के पास लड़ने-मरने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

(ङ) तात्या टोपे का हार मानने का कारण यह था कि इतने धोखा देकर तात्या को अंग्रेज अधिकारी के सामने पेश कर दिया। और इन्होंने अंग्रेज अधिकारी से बहस करते हुए कहा कि तुम न्याय के नाम को बदनाम मत करो। मैं हार गया और तुम मुझे सीधे से फाँसी दे दो। न्याय तो तब होगा जब हमारे देशवासी जागेंगे। मैं तो मर जाऊँगा, पर देर-सवेर न्याय होकर रहेगा। मैं तुमसे न्याय नहीं चाहता।

(2) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) बढ़कर, (ख) शहीद (ग) सफलता (घ) सम्मुख

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) तात्या को गीता के उस वचन में विश्वास था कि लड़ते हुए मरेंगे तो स्वर्ग प्राप्त होगा और यदि जीत जाएँगे तो स्वतंत्र भारत के दर्शन होंगे।

(ख) तात्या ने लड़ते हुए स्वर्ग प्राप्ति या स्वतंत्र भारत के प्राप्ति की बात की।

(ग) शत्रु सेना का एक व्यक्ति निहत्था आगे बढ़ रहा था।

(घ) तात्या टोपे के गले में फाँसी का फँदा उन्होंने स्वयं ही डाला।

(4) सही विकल्प पर () का निशान लगाइए—

(क) सौ-दो-सौ (ख) (ii) स्वर्ग (ग) (ii) नाल

(घ) (i) बेड़ियाँ

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए।

(6) निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए—

वीरगति = वीर + गति राजनीति = राज + नीति

आत्मसमर्पण = आत्म + समर्पण भारतवासी = भारत + वासी

देशवासी = देश + वासी,

(7) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

भाई = भ्राता, बन्धु

सागर = समुद्र, जलोधी

शत्रु = दुश्मन, विरोधी

(8) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए—

जिसमें शक्ति न हो = शक्तिहीन

जिसका स्वामी न हो = स्वामीविहीन

जो सदा रहे = सदैव
भारत में रहने वाला = भारतीय
जो कैद में हो = कैदी
क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(4) भगत सिंह के पत्र

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

- (क) भगत सिंह ने अपने पहले पत्र में 'बापू जी' अपने दादा जी को कहा है।
(ख) दूसरे पत्र में भगत सिंह ने गालिबन ड्रामा की बात कही।
(ग) 'माँ' को जेल में लाने के लिए भगत सिंह ने अपने पिता को इसलिए मना किया क्योंकि उनकी माँ उनको देखकर रोएँगी और इससे इन्हें तकलीफ होगी।
(घ) भगत सिंह ने अपने पिता से गीता रहस्य, नेपोलियन की मोटी सवानह और अंग्रेजी के कुछ आत्मा नॉवेल लाने का अनुरोध किया था।

- (ङ) भगत सिंह अपना घर छोड़ने के लिए इसलिए मजबूर हुए क्योंकि वे अपने गुलाम देश को आजाद करवाना चाहते थे।
(च) भगत सिंह उस वक्त की प्रतीक्षा कर रहे थे जब उन्हें देश की रक्षा करने का मौका मिलेगा।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए—

- (क) ख्वाहिशात (ख) यज्ञोपवीत, (ग) प्रतीक्षा, (घ) ड्रामा, (ङ) नॉवेल

(3) सोच-समझकर बताइए—

- (क) भगत सिंह ने पत्र अपने पूज्य पिताजी को लिखा था।
(ख) भगत सिंह ने पत्र दिल्ली जेल से लिखा था।
(ग) भगत सिंह के साथ हावालात में निहायत अच्छा सलूक किया जा रहा था।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

- (क) (i) पिता को, (ख) (ii) दिल्ली जेल से।
(ग) (iii) 7 मई 1929 को, (ङ) (ii) वालिदा साहिब को, (ड) (iii) कांग्रेस दफ्तर के

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

- (क) भगत सिंह ने पूज्य पिता जी से।
(ख) भगत सिंह ने पूज्य पिताजी महाराज से।
(ग) भगत सिंह ने पूज्य पिताजी महाराज से।

(6) किसने, किससे, कहा ?

(7) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए—

- उम्मीद—उम्मीदें मशविरा—मशविरे, जरूर—जरूर
कोशिश—कोशिशें तकलीफ—तकलीफें हालात—हालातों
उसूल—उसूलों वकील—वकीलों

(8) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

- उम्मीद—नाउम्मीद, जिंदगी—मौत
अच्छा—बुरा फिक्र—बेफिक्र
तकलीफ—आराम खास—आम

(9) दिए गए शब्दों के वाक्य बनाइए—

- (*) जिंदगी—मानव जिंदगी अमूल्य होती है।
(*) प्रतीक्षा—यात्री प्रतीक्षालय में प्रतीक्षा करते हैं।

(*) ड्रामा—अनावश्यक ड्रामा नहीं करनी चाहिए।
 फ्रिक्क—माँ को बेटे की बहुत फ्रिक्क होती है।
 अहमियत—समय की अहमियत सबको समझना चाहिए।
 क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

अपना-अपना भाग्य

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

- (क) मित्र द्वारा लेखक को बेंच पर बैठाने पर लेखक के मन में घुटन महसूस हो रही थी क्योंकि मित्र द्वारा जबरदस्ती बैठा लेने के कारण लेखक के पाल बैठने के अलावा कोई दूसरा चारा भी तो नहीं था और उसे लाचार बैठे रहना पड़ा।
 (ख) लड़के की आयु कोई दस वर्ष होगी और वह नंगे पैर तथा नंगे सिर एक मैली सी कमीज लटकाए था। वह गोरे रंग का था पर मैल से काला पड़ गया था। आँखें बड़ी अच्छी लेकिन सूनी थीं। माथा जैसे अभी से झुर्रियाँ खा गयी थीं।
 (ग) लड़का गाँव से शहर इसलिए आ गया था क्योंकि वहाँ न कोई काम एवं न कोई रोटी की व्यवस्था थी। बाप भूखा रहता था और मारता था। माँ भूखी रहती थी और रोती रहती थी। इसके कई छोटे भाई बहन थे इसलिए भाग आया।
 (घ) लड़के ने रात में दुकान पर सोना बताया।
 (ङ) जिनके लिए लेखक के मित्र ने नौकरी की खोज की थी, उन्होंने लड़के पर यह कटाक्ष किया कि ये पहाड़ी बड़े शैतान होते हैं। बच्चे-बच्चे में गुन छिपे रहते हैं। अगर मैं ऐरे-गैरे को नौकर बना लूँ और बह दूसरे ही दिन न जाने क्या-क्या लेकर चंपत हो जाए।

(2) दिए गए वाक्यों को पूरा कीजिए—

- (क) घंटे के घंटे सरक गए, अंधकार गाढ़ा हो गया, बादल सफेद होकर जम गए।
 (ख) हम अपने-अपने होटलों के लिए चल पड़े।
 (ग) सदी इतनी थी कि सोचा, कोट पर एक कंबल और होता तो अच्छा होता।
 (घ) बालक मौन-मूक, फिर फिर भी बोलता हुआ चेहरा लेकर खड़ा रहा।

(3) सोच-समझकर बताइए—

- (क) नैनीताल में संध्या समय लेखक मित्र के साथ ताल के किनारे-किनारे एक साथ चल रहे थे।
 (ख) संध्या ढलते-ढलते ताल के किनारे के वातावरण में रूई के रेशे-से, भाप-से बादल लेखक व इनके मित्र के सिरों को छू-छू कर बेरोक-टोक घूम रहे थे। हल्के प्रकाश और अंधियारी से रंगकर कभी वे नीले दिखते, कभी सफेद और फिर जरा सी देर में अरुण पड़ जाते थे। अंधकार गाढ़ा हो गया एवं बादल सफेद होकर जम गए।
 (ग) रात के कुहरे में लेखक मित्र के साथ बेंच पर इसलिए बैठा था क्योंकि मित्र द्वारा जबरदस्ती बैठा जाने के कारण लाचार बैठे रहने के अलावा और कोई दूसरा चारा नहीं था।

(घ) नहीं।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

- (क) (ii) प्रेतगति, (ख) (ii) दस, (ग) (iii) काली-सी। (घ) (iii) काली-सी (ङ) (iii) एक रुपया और झूठा खाना।

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए—

- (क) ताल, (ख) रोती (ग) खाने, (घ) दया

(7) निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बनाइए—

- गरीब—गरीब, झूठ—झूठा, सच—सच्चा।
 नादानी—नादान, दुःख—दुःखी, सुख—सुखी

(8) निम्नलिखित शब्दों के लिंग-निर्धारण कीजिए—

- कोहरा—पुल्लिंग, सफेदी—स्त्रीलिंग दुनिया—स्त्रीलिंग

पहाड़-पुल्लिंग बादल-पुल्लिंग नौकरी-स्त्रीलिंग
(9) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-
 बादल-मेघ, जलधर मित्र-दोस्त, साथी
 आँख-नेत्र, नयन नदी-दरिया, सारंग
क्रियात्मक गतिविधियाँ-स्वयं कीजिए।

(6) स्नेह-शपथ

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

- (क) प्रेम का प्रभाव गिरे हुए लोगों के ऊपर उठने पर सर्वाधिक पड़ता है।
 (ख) किसी व्यक्ति से गलती हो जाने पर कवि उसके साथ स्नेहपूर्वक व्यवहार करने को कह रहे हैं।
 (ग) कवि ने प्यार की असीमित शक्ति को इस प्रकार सिद्ध किया कि प्यार गहरे से गहरे गर्त में भी जा सकता है। जमाना चाहे जितना भी भ्रष्ट हो प्यार वहाँ भी हर समय पनप सकता है। जो गिरे हुए को उठा सके इससे प्यारा उपाय कुछ भी नहीं हो सकता है। और वह प्यार जो गिरे को उठा न पाए उससे गहरा पतन भी कुछ नहीं होता है। इसलिए हमें सबको प्यार भरी आँखों से ही देखना चाहिए।

(घ) कवि घर-घर प्यार को पहुँचाने की प्रेरणा दे रहा है।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए-

(क) शत्रु (ख) जिह्वा (ग) सख्त बात, (घ) करुणाकर

(3) सोच-समझकर बताइए-

- (क) प्रस्तुत कविता के रचयिता 'श्री भवानी प्रसाद मिश्र जी' हैं।
 (ख) हमें शपथ की आदत इसलिए नहीं होनी चाहिए क्योंकि शपथ कोई और लेता है और परेशानी किसी और के पास सरक कर आ जाती है।

(ग) मित्र अथवा शत्रु के अनादर होने पर सख्त बात भूल कर भी नहीं कहना चाहिए।

(घ) दुस्सासी तथा दुष्ट व्यक्ति अश्रुपूर्ण स्नेह से समर्पण कर देता है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) (ii) गिरे हुए को उठाने को, (ख) (i) स्नेहपूर्वक,

(ग) (i) भवानी प्रसाद मिश्र,

(5) उच्चारण कीजिए-स्वयं कीजिए-

(6) सही मिलान कीजिए।

(क) शत्रु-दुश्मन, मित्र-दोस्त, नेह-स्नेह।

गेह-गृह, सख्त-कठोर

(7) प्रत्येक के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

मित्र-दोस्त, साथी समय-मियाद, काल

स्नेह-प्यार, प्रेम काम-कार्य, कर्म

(8) दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए-

- (*) कठिन-हमें कठिन परिश्रम से नहीं घबराना चाहिए।
 (*) परिचित-मेरा पड़ोसी मेरा परिचित व्यक्ति है।
 (*) भ्रष्ट-भ्रष्ट लोगों से दूर रहना चाहिए।
 (*) करुणा-करुणा दिखाने वाले सम्मान के पात्र होते हैं।
 (*) शपथ-कोई भी शपथ बहुत सोच-समझकर लेना चाहिए।

क्रियात्मक गतिविधियाँ-स्वयं कीजिए।

(7) मेरी माँ

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) बिस्मिल ने वकालतनामे पर हस्ताक्षर इसलिए नहीं किए क्योंकि पिताजी का फर्जी हस्ताक्षर करना बिलकुल धर्म विरुद्ध था।

(ख) बिस्मिल के लिए माता जी का सबसे बड़ा आदेश यही था कि किसी की भी प्राणहानि न हो। उनका कहना था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड मत देना।

(ग) विवाह के समय बिस्मिल की माताजी नितांत अशिक्षित थीं।

(घ) बिस्मिल अपने जीवन में हमेशा सत्य का आचरण करते थे, चाहे कुछ हो जाए, सत्य बात कह देते थे।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) लखनऊ (ख) लेवा और त्याग (ग) प्राणहानि, (घ) गृहकार्य

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) पिताजी और दादाजी को बिस्मिल का बड़े उत्साह के साथ सेवा-समिति में सहयोग देना अच्छा नहीं लगता था।

(ख) बिस्मिल के परिवार में इनकी माताजी इनका उत्साह भंग नहीं होने देती थीं।

(ग) बिस्मिल की माँ ग्यारह वर्ष की उम्र में विवाह कर शाहजहाँपुर आयी थीं।

(घ) बिस्मिल का जन्म माताजी के शाहजहाँपुर आने पर हुआ।

(ङ) बिस्मिल अपना विवाह इसलिए नहीं कर सके थे क्योंकि उनके लिए समाज-सेवा एवं देश-सेवा सर्वोपरि था।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) आर्य समाज (ख) (ii) हिन्दी

(ग) देववाणी (घ) (ii) अधीर न होने दिया।

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

उज्ज्वल—धूमिल, शिक्षित—अशिक्षित

स्वाधीन—पराधीन, सफल—असफल

धार्मिक—अधार्मिक, प्रेम—घृणा

धर्म—अधर्म, पूर्ण—अपूर्ण

उत्साहित—हतोत्साहित, सच्चरित्र—दुश्चरित्र

विशेष—आम, सदैव—कभी-कभी

(7) संधि-विच्छेद कीजिए—

अनुरोध = अनु + रोध, हस्ताक्षर = हस्त + अक्षर

क्रांतिकारी = क्रांति + कारी, प्राणदण्ड = प्राण + दण्ड

भारतमाता = भारत + माता

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

पुनरावृत्ति प्रश्न-पत्र-1

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) कवि ने यह दुनिया भिखमंगों की बताई है।

(ख) धर्म के विषय में एनीबेसेंट कहती थीं कि धर्म तो परमात्मा तक पहुँचने का माध्यम है। जैसे नदियाँ समुद्र में जा मिलती हैं, वैसे ही धर्म भी प्रभु के प्राप्ति का मार्ग है।

(ग) तात्या टोपे का गीता के उस वचन में विश्वास था कि लड़ते हुए मरेंगे तो स्वर्ग प्राप्त होगा और यदि जीत जाएँगे तो स्वतन्त्र-भारत के दर्शन होंगे।

(घ) रात के कुहरे में लेखक मित्र के साथ इसलिए बैठा था क्योंकि मित्र द्वारा जबरदस्ती बैठा लिए जाने के कारण लाचार बैठे रहने के अलावा और कोई दूसरा चारा नहीं था।

(ङ) दुष्ट एवं दुस्साहसी व्यक्ति अश्रुपूर्ण स्नेह से समर्पण कर देता है।

(2) सही विकल्प पर () का चिह्न लगाइए—

- (क) (i) हैसियत, (ख) (ii) स्वयं तात्या टोपे ने,
(ग) (ii) प्रेतगति, (घ) (i) पिताजी (ङ) (i) देववाणी

(3) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

- (क) आलम (ख) थियोसोफिकल (ग) टुकड़ी
(घ) नॉबेल (ङ) ताल

(4) सही के सामने () व गलत के सामने () का चिह्न लगाइए—

- (क) (x) (ख) (x) (ग) (x) (घ) (x) (ङ) ()

(8) प्रगति का मंत्र

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

- (क) हरि प्रसाद मास्टर जी बड़े विनम्र और उच्च आदर्शों वाले व्यक्ति थे।
(ख) मास्टर जी की शिक्षा के तीन लक्ष्य व्यक्तित्व निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण थे।
(ग) मास्टर जी को यह बात जँच गयी कि जब तक शिक्षा के द्वारा प्रौढ़ों के विचारों में परिवर्तन नहीं किया जाएगा, उन्हें शिक्षा का महत्त्व न समझाया जाएगा, वे अपने बच्चों को इस ओर प्रेरित नहीं करेंगे।

(घ) मास्टर जी के बार-बार समझाने पर अभिभावकों के मन में यह भाव जग गए कि हम भले ही भूखे रह लेंगे पर अपने बच्चों को शिक्षित अवश्य बनाएँगे।

(ङ) प्रौढ़ पाठशाला में मास्टरजी लोगों को केवल अक्षर ज्ञान ही नहीं करवाते थे, बल्कि अनेक व्यवहारिक जानकारीयों भी पुस्तकों से पढ़कर सुनाते, जैसे—गाँव में फैली बीमारियों से कैसे बचा जाए? सरकार किसानों की क्या-क्या सहायता करती है? स्वस्थ कैसे रहा जा सकता है? आदि-आदि।

(च) बच्चों के लिए विद्यालय में कमाई के लिए, स्कूली पढ़ाई के बाद वे एक घंटा बच्चों को रोक रखते। इस घंटे में वे छोटे-छोटे ऐसे काम बच्चों से कराते, जिससे उन्हें कुछ पैसे भी मिल सकें। गाँव का बनिया हर सप्ताह शहर का चक्कर लगाता था। उससे उन्होंने रद्दी अखबार मंगवा लिए थे। बच्चे उनके लिफाफे बना देते। बनिया जब शहर जाता, तो उन्हें बेच आता। जो पैसे आते, अपने अपने काम के हिसाब से सभी बच्चों को लागत निकालकर दे दिए जाते।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए—

- (क) हरिप्रसाद (ख) चुनौतियाँ (ग) संस्कारी, (घ) संख्या, (ङ) जिलाधीश (च) समस्या

(3) सोच-समझकर बताइए—

- (क) मास्टरजी के गाँव से वापस जाने की बात पर सभी गाँववालों के आँखों में आँसू आ गए।
(ख) मास्टर जी को गाँव का हर व्यक्ति अपना हितैषी मानने लगा था। वे जो भी कहते, वे सब वैसा ही करने में जुट जाते।
(ग) गाँव में नियुक्ति पाकर हरिप्रसाद मास्टर जी को तनिक भी बुरा नहीं लगा, उल्टे अच्छा ही लगा कि कुछ सेवा करने का अवसर मिलेगा।

(घ) वे यह भली-भाँति जानते थे कि भारतवर्ष की अधिकांश जनता गाँवों में बसती है। उसे शिक्षित, साक्षर और संस्कारी बनाना देश की बहुत बड़ी सेवा है।

(ङ) गाँववालों को प्रायः यह शिकायत होती थी कि जो अध्यापक यहाँ आते हैं, वे बच्चों को ठीक से पढ़ाते नहीं हैं, अधिकतर छुट्टी पर रहते हैं।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

- (क) (iii) प्रौढ़ पाठशाला, (ख) (i) किताबों में बड़ी उपयोगी बातें लिखी रहती है। (ग) (iii) शहर का (घ) (ii) हितैषी मानने लगा था, (ङ) (ii) वार्षिकोत्सव

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) दिए गए वाक्यों को पूरा कीजिए—

(क) इस प्रकार मास्टर साहब की प्रौढ़ पाठशाला में पाँच-सात व्यक्ति रात्रि में आने लगे।

(ख) गाँव का बनिया हर सप्ताह शहर का चक्कर लगाता था।

(ग) सच्ची लगन और निष्ठा से किए गए काम में कभी-न-कभी निश्चित रूप से सफलता मिलती है।

(7) प्रत्यय और मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

| | मूल शब्द | प्रत्यय |
|-----------|----------|---------|
| अधिकतर | अधिक | तर |
| सरकारी | सरकार | ई |
| व्यवहारिक | व्यवहार | इक |
| उपयोग | उप | योग |
| कुशलता | कुशल | ता |
| सफलता | सफल | ता |

(8) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए—

बीमारी—बीमारियाँ, कुल्हाड़ी—कुल्हाड़ियाँ,

जानकारी—जानकारियाँ, चुनौती—चुनौतियाँ,

बच्चा—बच्चे, लिफाफा—लिफाफे।

(9) निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए—

(*) विनम्र—विनम्र व्यक्ति हर जगह पूजित होता है।

(*) लगन—हमें लगन व परिश्रम से काम करना चाहिए।

(*) संकल्प—संकल्प लेने से लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है।

(*) लक्ष्य—लक्ष्य भेदना आसान कार्य नहीं होता है।

(*) प्रगति—मेहनत से ही प्रगति संभव है।

(*) कामना—राम की कामना है कि श्याम मिल जाए।

(10) निम्नलिखित वाक्यों में से निर्देशित पद छाँटकर लिखिए—

(क) मास्टर जी—कर्ता (ख) मास्टर साहब—कर्म

(ग) बनिया—संज्ञा (घ) जानते थे—क्रिया।

(ङ) वे—सर्वनाम।

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(9) विक्रमादित्य का सिंहासन

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) विक्रमादित्य के सम्मुख लाये गये अपराधी को इस तथ्य का पता होता था कि विक्रमादित्य की आँखें उसके अपराध को पहचान ही लेंगी।

(ख) टीले पर बैठे लड़के की भाव-भंगिमा शांत व गंभीर होती थी और उसकी बातचीत का ढंग तथा मुखमुद्रा अद्भुत और प्रभावशाली होते थे।

(ग) श्रमिकों ने टीला खोदकर उसे खोला तो उसके नीचे काले संगमरमर का चौकोर तख्त पाया जो पत्थर के बत्तीस देवदूतों के हाथों और पंखों पर टिका हुआ था। अवश्य ही वह विक्रमादित्य का सिंहासन था।

(घ) चरवाहे के लड़के की प्रसिद्धि का समाचार पाकर राजा ने यह अनुमान लगाया कि वह लड़का अवश्य ही विक्रमादित्य

के न्याय-सिंहासन पर बैठा होगा। राजा का अनुमान ठीक ही था।

(ड) सिंहासन नगर में लाए उसे न्याय-कक्ष में रखा गया और राजा ने अपनी प्रजा को तीन दिन तक उपवास रखने और प्रार्थना करने का आदेश दिया और घोषणा की कि चौथे दिन वह सार्वजनिक रूप से इस सिंहासन पर बैठेगा।

(च) देवदूतों ने बारी-बारी से राजा से प्रश्न पूछे और उसे हटना पड़ा।

ऐसा तब तक चलता रहा जब तक उस पत्थर को पकड़े केवल एक देवदूत रह गया। राजा बड़े आत्मविश्वास के साथ सिंहासन के पास गया, क्योंकि उसे लग रहा था कि उस दिन उसे अवश्य ही अपना स्थान ग्रहण करने की अनुमति मिल जाएगी।

परंतु जैसे ही वह सिंहासन के पास पहुँचा, अंतिम देवदूत बोला—“ऐ राजा! क्या तुम्हारा हृदय बच्चे के समान बिल्कुल शुद्ध है? अगर ऐसा है तो तुम वास्तव में सिंहासन पर बैठने योग्य हो।”

राजा ने बहुत धीरे से कहा—“ऐ राजा! क्या तुम्हारा हृदय बच्चे के समान बिल्कुल शुद्ध है? अगर ऐसा है तो तुम वास्तव में सिंहासन पर बैठने योग्य हो।”

राजा ने बहुत धीरे से कहा—“नहीं, नहीं! मैं इस योग्य नहीं हूँ।” यह सुनते ही देवदूत उस सिंहासन को अपने सिर पर रखकर आकाश में उड़ गया।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) महत्त्वपूर्ण, (ख) कला और संस्कृति, (ग) मैदान, (घ) न्यायाधीश, (ङ) गंभीर

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) विक्रम संवत् के प्रति मान्यता यह है कि सम्राट विक्रमादित्य का शासनकाल भारतीय इतिहास में उसी से आरंभ होता है।

(ख) विक्रमादित्य से संबंधित कहानियों में प्रमुख रूप से यह तत्त्व प्रकट होते हैं कि ‘ज्ञान’ व ‘न्याय’ से उसे अत्यंत प्रेम था। उसने अपनी प्रजा के साथ विशुद्ध एवं पूर्ण न्याय किया। अपने दरबार में वह विलक्षण प्रतिभा के धनी लोगों को रखता था। कहा जाता है कि उसमें न्याय करने की अद्भुत योग्यता थी।

ऐसा कहा जाता है कि विक्रमादित्य ने कभी किसी निर्दोष को दंडित नहीं किया। न्याय करने में वह कभी भी धोखा नहीं खा सकता। अपराधी को जब विक्रमादित्य के सामने लाया जाता था, तो वह दंड के भय से काँपने लगता था। लोग अपनी समस्याओं का उत्तम समाधान विक्रमादित्य द्वारा ही पाते थे। उसके पश्चात भी यदि भारत में कोई न्यायाधीश अपनी पूर्ण योग्यता से निर्णय सुनाता था, तो उसके बारे में कहा जाता था कि वह विक्रमादित्य के न्याय सिंहासन पर बैठा होगा।

(ग) विक्रमादित्य अपने दरबार में विलक्षण प्रतिभा के धनी लोगों को रखता था।

(घ) विक्रमादित्य में न्याय करने की अद्भुत योग्यता थी।

(ङ) विक्रमादित्य के विषय में प्रमुख रूप से यह प्रचलित थी कि ‘ज्ञान’ व ‘न्याय’ से उसे अत्यंत प्रेम था।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) उज्जैन को, (ख) (ii) न्यायाधीश

(ग) (iii) विक्रमादित्य (घ) (ii) न्यायपूर्ण नहीं था।

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) दिए गए शब्दों के वाक्य बनाइए—

(*) ज्योति—हम आँख की ज्योति से ही इस सुन्दर संसार को देखते हैं।

(*) निर्णय—हमें सही निर्णय लेना चाहिए।

(*) परिवर्तन—परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है।

(*) योग्य—मेरे कक्षाध्यापक काफी योग्य शिक्षक हैं।

(*) ग्रहण—हमें शिक्षा ग्रहण करने का मौका नहीं चूकना चाहिए।

(7) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

राजा = नृप, नरेश, महिपति

प्रतिभा = कौशल, दक्षता, तेजी

पृथ्वी = धरा, वसुधा, भूमि

आकाश = आसमान, गगन, नभ

वृक्ष = पेड़, तरु, पादप

(8) निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करते हुए तीन-तीन शब्द लिखिए—

प्र = प्रयोग, प्रकोप, प्रतीक

कु = कुलीन, कुपित, कुत्सित

वि = विद्वान, विमल, विचार

(9) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए—

वीकरमादितय = विक्रमादित्य, परतीमा = प्रतिमा

न्यायधिस = न्यायाधीश, संसकृति = संस्कृति

मूखमूदरा = मुखमुद्रा, पूरौहित = पुरोहित

(10) शब्द-विच्छेद कीजिए—

शासनकाल = शासन + काल

भारतवर्ष = भारत + वर्ष

न्यायधीश = न्याय + धीश

आत्मविश्वास = आत्म + विश्वास

(11) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

न्याय = अन्याय, अपराधी = निरपराधी,

स्थित = गतिमान, शांत = अशांत

योग्य = अयोग्य, स्वीकार = अस्वीकार

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(10) अमरनाथ की यात्रा

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) महागुनस की चोटी की ऊँचाई 14,000 फीट है।

(ख) बस के ड्राइवर द्वारा जम्मू की परिक्रमा करने का कारण पहलगाम की ओर बस ले जाना था।

(ग) 'छड़ी मुबारक' श्रीनगर के शंकराचार्य मंदिर में प्रस्थापित शिवलिंग की प्रतीक है और अमरेश्वर शिव से श्रावणी पूर्णिमा को गुफा में जाकर सबसे पहले उन्हीं का मिलन होता है।

(घ) नीलगंगा के किनारे बसी हुई बस्ती धार्मिक दृष्टि से बड़ी महत्वपूर्ण है। कथा के अनुसार एक बार काम-क्रीड़ा और खेल की बातों में भगवान श्री सदाशिव का मुख श्री पार्वती जी के नेत्रों के साथ लग गया। नतीजा यह हुआ कि उनका मुख अंजन के कारण काला हो गया। भगवान सदाशिव ने अपने मुख को काला देखा, तो उसे श्री गंगा (नीलगंगा) में धोया, जिससे गंगा जी का रंग काला पड़ गया। इस पल के स्पर्श से महापापों का नाश हो जाता है।

(2) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) हरियाली (ख) लिद्दर (ग) जवाहर सुरंग

(घ) टेंट

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) एक दिन लेखक के पास एक फोन आया, “नंदनजी, कश्मीर चलिएगा?”

“चलूँगा। अभी कश्मीर गया नहीं हूँ। कब चलना है?”

लेखक ने जवाब दिया। “बताऊँगा, प्रेम कपूर और छोटे भी चल रहे हैं।”

इस तरह लेखक भी इस महायात्रा का एक यात्री बनकर जुड़ गया था।

(ख) पहाड़ों पर ऊपर चढ़ते-चढ़ते ऑक्सीजन की कमी से जूतों का फीता बाँधने के लिए झुकना पड़ता है तो ऐसा लगता है जैसे एक मन बोझ उठाकर खड़ा हुए हैं।

(ग) 'छड़ी मुबारक' श्रीनगर के शंकराचार्य मंदिर में प्रस्थापित शिवलिंग का प्रतीक है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (i) डर (ख) (ii) परमात्मा

(ग) (i) चौदह हजार फीट (घ) (ii) मित्रों ने

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) रेखा खींचकर निम्न वाक्यों का मिलान कीजिए—

जाने के दिन तक—सारी तैयारी पक्की थी।

जब जम्मू पहुँचे—तो मारे गर्मी के दम निकला जाए।

सुबह की बस के टिकट—बुक करा लिए गए थे।

सुबह तड़के उठकर—सामान लेकर बस अड्डे पर जा लगे।

मुझे याद नहीं पड़ता—कि बचपन में कभी घोड़े पर सवार हुआ था।

(7) निम्नलिखित शब्दों के विशेषण पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) अच्छा, (च) लालची, (ज) पर्वतीय

(8) निम्नलिखित शब्दों को विलोम शब्द लिखिए—

सुगंध—दुर्गंध, परिश्रमी—आलसी, सामान्य—असामान्य

स्मृति—विस्मृति, चतुर—मूर्ख, निर्जीव—सजीव

सेवक—मालिक, विषैला—नुकसान रहित, जीवन—मृत्यु

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(11) दोहावली

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) ईश्वर संसार में सभी जगह एवं सभी वस्तुओं में व्याप्त हैं।

(ख) मधुर वचन औषधि समान माने गए हैं।

(ग) कबीर ने औषधि समान मधुर वचनों का प्रयोग करने को कहा है क्योंकि कटु वचन कान रूपी मार्ग में तीर के समान प्रवेश करता है।

(घ) रहीम ने थोड़े दिन की विपदा को भली इसलिए बताया है क्योंकि भलाई एवं बुराई के जगत में सबके बारे में जानकारी प्राप्त हो जाती है।

(ङ) बड़ी वस्तु प्राप्त करने पर भी छोटी वस्तु का त्याग इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि जहाँ तलवार काम नहीं करती है वहाँ सूई काम कर जाता है।

(च) रहीम ने प्रेम संबंध तोड़ने से इसलिए मना किया है क्योंकि प्रेम का धागा एक बार टूट जाने पर वह जुड़ नहीं पाती है और अगर वह जुड़ भी जाए तो उसमें एक गाँठ पड़ जाता है।

(2) दिए गए दोहरे का भावार्थ लिखिए—

(क) कमजोर को नहीं सताना चाहिए क्योंकि इससे बड़ी बददुआ लग जाती है। मरी हुई खाल से स्वाँस निकलेगी तो संसार ही भस्म हो जाएगा।

(ख) बड़ी वस्तु प्राप्त करने पर भी छोटी वस्तु का त्याग नहीं करना चाहिए क्योंकि जहाँ तलवार काम नहीं करता है वहाँ सूई काम कर जाता है।

(ग) अपने आत्मसम्मान, मर्यादा, कांति आदि क्योंकि आत्मसम्मान के बिना सब सूना है। आत्मसम्मान के बिना मोती व मनुष्य आदि की उत्थान संभव नहीं है।

(घ) मधुर वचन औषधि के समान व कटु वचन तीर के समान होता है। और यह काम रूपी मार्ग के भीतर जाता है और समस्त शरीर को बेधता है।

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) संतों का स्वभाव उस चंदन के समान होना चाहिए जो अपने चारों ओर विषधर सर्पों द्वारा लपेटे जाने के बावजूद भी अपना सुगंध नहीं छोड़ता है।

(ख) दुर्बल व्यक्तियों को इसलिए नहीं सताना चाहिए क्योंकि मरे हुए व्यक्ति से कोई स्वाँस नहीं निकलती और यदि निकलती है तो सारा संसार मस्म हो जाता है।

(ग) कबीर ने कड़वे वचनों की तुलना तीर से किया है जो सारे शरीर को भेद देता है।

(घ) स्वज्जनों के प्रति हमारा व्यवहार बेहद अपनापन वाला होना चाहिए।

(ङ) मृग कस्तूरी को बाहरी दुनिया में खोजता रहता है लेकिन वह उसी के अंदर होता है जैसे प्रत्येक के हृदय में राम होते हैं लेकिन वह उसे बाहरी दुनिया में खोजता रहता है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

- (क) (i) तीर, (ख) (ii) स्वयं उसी के भीतर
(ग) (ii) बेध देते हैं (घ) (ii) सम्मान (ङ) (i) संतर्द

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) भाववाचक संज्ञा बनाइए—

सज्जन-सज्जनता, दुर्बलता-दुर्बलता, सीतल-सीतलता

मधुर-मधुरता, दयालु-दयालुता, ऊँचा-ऊँचाई

(7) तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए—

पानी = जल, नीर, अंबु

तलवार = शमशीर, कृपाण, कलवार

सर्प = नाग, विषधर, साँप

(8) विलोम शब्द लिखिए—

सज्जन-दुर्जन, मधुर-कटु, प्रेम-नफरत

विष-अमृत, सीतल- सुखद-दुःखद

लघु-दीर्घ, हित-अहित, संकीर्ण-विस्तृत

(9) निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करते हुए दो-दो शब्द लिखिए—

दुर-दुर्लभ, दुर्गम उप-उपचार, उपप्रधान

अभि-अभिभावक, अभिभूति अनु-अनुराग, अनुपालन

प्र-प्रतीक, प्रचुर प्रति-प्रतिकार, प्रतिरूप

परि-परिवार, परिचय वि-विद्वान, विकार

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(12) दुःख का अधिकार

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) पोशाक मनुष्य की श्रेणी का वर्गीकरण इस प्रकार से करती है कि वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाजे खोल देती है, परंतु कई बार ऐसी भी परिस्थितियाँ आ जाती हैं कि हम जरा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं, उस समय यह पोशाक ही बंधन और अड़चन बन जाती है। कुछ खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से उसी प्रकार रोके रहती है, जिस प्रकार वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर गिरने नहीं देती।

(ख) पोशाक से दुःख की अभिव्यक्ति में बाधा तब पहुँचती है जब हम जरा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं, उस समय यह पोशाक ही बंधन और अड़चन बन जाती है।

(ग) खरबूजे खरीदने के लिए कोई आगे इसलिए नहीं आ रहा था क्योंकि खरबूजों को बेचने वाली कपड़े से मुँह छिपाए, सिर को घुटनों पर रखे फफक-फफक कर रो रही थी। लोग घृणा से उसी स्त्री के संबंध में बात कर रहे थे। उस स्त्री का रोना देखकर मन में एक व्यथा-सी उठती, पर उसके रोने का कारण जानने का उपाय क्या था?

एक आदमी ने घृणा से थूकते हुए कहा, “क्या जमाना आ गया है! जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगाकर बैठी है।”

(घ) खरबूजे बेचने वाली महिला के घर परसों उसका लड़का मुँह-अँधेरे सुबह बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था। गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए एक साँप पर लड़के का पैर पड़ गया। साँप ने लड़के को डंस लिया।

लड़के की बुढ़िया माँ बावली होकर ओझा को बुला लाई। झाड़ना-फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा हुई। पूजा के लिए दान-दक्षिणा चाहिए। घर में जो कुछ आटा और अनाज था, दान-दक्षिणा में उठ गया। माँ, बहू और बच्चे भगवान से लिपट-लिपटकर रोए, पर भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला। साँप के विष से उसका सारा बदन नीला पड़ गया था।

(ङ) लेखक को उस अंधे स्त्री की व्यथा देखकर उस पुत्र-विंयोगिनी के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए पिछले साल अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी माता की बात सोचने लगा। वह संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु के बाद ढाई मास तक पलंग से उठ नहीं सकी थी। पन्द्रह-पन्द्रह मिनट बाद पुत्र-वियोग से मूर्छा आ जाती थी और मूर्छा न आने की अवस्था में आँखों से आँसू न रुकते थे। दो-दो डॉक्टर हरदम सिरहाने बैठे रहते थे। हरदम सिर पर बर्फ रखी जाती थी। शहर भर के लोगों के मन उसके पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए-

(क) पोशाक (ख) स्त्री (ग) बहू(घ) ओझा (ङ) विष

(3) सोच-समझकर बताइए-

(क) व्यक्ति की पहचान उसकी पोशाक द्वारा इसलिए की जाती है क्योंकि मनुष्य का समाज में अधिकार और उसका दर्जा निश्चित करने वाले कारणों में से एक कारण पोशाक भी है। वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाजे खोल देती है।

(ख) खरबूजे बिक्री के लिए रखे थे फिर भी कोई इसलिए नहीं खरीद रहा था क्योंकि औरत द्वारा सिर को घुटनों पर रखे फफक-फफक कर रोने के कारण लोग घृणा से उस स्त्री के संबंध में बात कर रहे थे। जैसे-परचून की दुकान पर बैठे लाला जी ने कहा, “अरे भाई मरे-जिए का कोई मतलब न हो पर दूसरे के धर्म-ईमान का तो ख्याल करना चाहिए। जवान बेटे के मरने पर तेरह दिन का सूतक होता है और वह यहाँ सड़क पर बाजार में आकर खरबूजे बेचने बैठ गई है।

हजार आदमी आते-जाते हैं, किसी को क्या मालूम कि इसके घर में सूतक है। कोई इसके खरबूजे खा ले तो उसका धर्म-ईमान कैसे रहेगा? क्या अंधेरे हैं।”

(ग) अंधेड़ उम्र की औरत को यह दुःख था कि सर्प-डंस के कारण उसका जवान लड़का मर गया था।

(घ) इस पाठ में संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु के बाद ढाई मास तक पलंग से न उठ सकी।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) (iii) पोशाकें, (ख) (iii) वृद्धा

(ग) (iii) ओझा, (घ) (iii) खरबूजे

(5) उच्चारण कीजिए-स्वयं कीजिए-

(6) किसने, किससे कहा?

(क) एक आदमी ने घृणापूर्वक दूसरे आदमी से।

(ख) दूसरे साहिब स्वयं से ही।

(ग) फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने दूसरे आदमी से।

(घ) परचून की दुकान पर बैठे लाला जी ने लोगों से।

(7) निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से वाक्य बनाइये-

(*) बरकत-जैसी नीयत होती है, अल्लाह वैसी ही बरकत देता है।

(*) दियासलाई-दियासलाई की तीली से कान नहीं खुजाना चाहिए।

(*) वियोग-पुत्र वियोग सबसे बड़ा दुःख होता है।

(8) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

अनेक-एक धर्म-अधर्म

घृणा-प्यार जवान-बूढ़ा

जमीन-आसमान मृत्यु-जीवन

अधिकार-अनाधिकार नया-पुराना

क्रियात्मक गतिविधियाँ-स्वयं कीजिए।

(13) काकी

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) श्यामू ने उपद्रव इसलिए मचा रखा था क्योंकि लोग उसकी माँ को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे।

(ख) श्यामू आसमान की ओर इसलिए देखता रहता था क्योंकि उससे यह बात छिपी न रह सकी कि काकी कहीं और नहीं, ऊपर भगवान के यहाँ गई है।

(ग) 'काकी' को नीचे उतारने के लिए श्यामू और उसके साथी ने यह योजना बनाई कि पतंग पर 'काकी' का नाम लिखेंगे और पतंग तानकर 'काकी' को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे।

(घ) श्यामू की योजना में उसका साथी भोला था और उसने पतंग को आसमान में ऊपर पहुँचाने के लिए पतंग में रस्सी बाँधने में मदद किया।

(ङ) श्यामू की पतंग देखकर उसके पिता विश्वेश्वर बहुत ज्यादा नाराज हुए क्योंकि श्यामू ने पतंग खरीदने के लिए अपने पिता के कोट से पैसा निकाला था।

(3) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) कोहराम (ख) कठिनाई (ग) शून्य मन (घ) मुखबिर (ङ) तमाचे।

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) श्यामू की नींद खुलने पर उसने देखा कि पूरे घर में कोहराम मचा हुआ है। उसकी माँ नीचे से ऊपर तब एक कपड़ा ओढ़े हुए कमल पर भूमि-शयन कर रही है और घर के सब लोग उसे घेरकर बड़े करुण स्वर में विलाप कर रहे हैं।

(ख) श्यामू ने कोट से रुपए पतंग में मोटी रस्सी बाँधने के लिए खरीदारी के लिए निकाले।

(ग) श्यामू इसलिए गंभीर था क्योंकि वह पतंग में पतली डोर बाँधकर काकी को नीचे नहीं उतार सकता था। क्योंकि पतली डोर पकड़कर काकी उतरती तो डोर के टूटने का डर था। पतंग में यदि मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाए।

(घ) गुरुजनों ने श्यामू को यह विश्वास दिलाया था कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है।

(ङ) श्यामू काकी का नाम पतंग लिखकर यह सोचता था कि नाम लिखा रहेगा तो पतंग ठीक उन्हीं के पास पहुँच जाएगी और डोर पकड़कर काकी उसके पास नीचे आ जाएगी।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) माँ मर गई थी,

(ख) (ii) अग्नि संस्कार कर दिया

(ग) (ii) काकी को आसमान से उतारने के लिए

(घ) (iii) काका की जेब से

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों के एकवचन रूप लिखिए—

पतंगे—पतंग कठिनाईयाँ—कठिनाई

चिंताएँ—चिंता खूटियाँ—खूँटी

रस्सियाँ—रस्सी गुरुजनों—गुरुजन

मुखबिरों—मुखबिर लोगो—लोग

(7) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

मोटी—पतली उदास—प्रसन्न

विश्वास—विश्वासघात उग्र—शांत

आकाश—पाताल शोक—प्रसन्नता

प्रफुल्ल—प्रफुल्लहीन ऊपर—नीचे

(8) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

उदास—दुःखी, कष्ट, परेशानी

अकस्मात्—अचानक, असूचित,
कोहराम—शोरगुल, चिल्लाना
हृदय—दिल, वक्ष, छाती
आकाश—नभ, गगन, आसमान
उपद्रव—बदमाशी, शैतानी, शरारत
रूदन—पीड़ा, कोलाहल, चिल्लाहट

(9) लिंग बदलिए—

लड़का—लड़की माता—पिता
काकी—काका बहन—भाई
क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(14) इब्राहिम गार्दी

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) इब्राहिम गार्दी मराठों का सेनापति था जो देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत था। अहमदशाह अब्दाली को इब्राहिम के नाम से इसलिए घृणा थी क्योंकि उसके सारे प्रलोभनों को अस्वीकार करते हुए इब्राहिम गार्दी ने देश के प्रति सच्ची श्रद्धा और भक्ति के साथ 'अल्लाह' कहते हुए प्राण त्याग दिया।

(ख) इब्राहिम गार्दी ने तौबा करने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि अपने मुल्क से मुहब्बत करने और उस पर जान देने वाले की तौबा नहीं गर्व करना चाहिए जिससे कि देश के सिर को नीचा नहीं होना पड़े।

(ग) इब्राहिम गार्दी के अनुसार सच्चा मुसलमान उसे कहते हैं जो अपने मुल्क के साथ गद्दारी कभी न करे और मुल्क को बरबाद करने वाले प्रदेशियों का कभी साथ न दे।

(घ) इब्राहिम गार्दी ऐसे बुत को पूजने वाला बुतपरस्त था जो दिल में बसा हुआ है और ख्याल में मीठा है।

(ङ) इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा हर पथ पर आगे बढ़कर काम करते रहना चाहिए।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) मराठों (ख) इब्राहिम (ग) उपस्थिति, (घ) फिरंगी

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) पानीपत की तीसरा युद्ध सन् 1761 ई. में हुआ।

(ख) इब्राहिम गार्दी मराठों का सेनापति था।

(ग) अब्दाली ने इब्राहिम गार्दी के टुकड़े-टुकड़े करके वध करने की आज्ञा दी।

(घ) प्रस्तुत अध्याय 'श्री वृंदावनलाल वर्मा जी' द्वारा रचित है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) सन् 1761 में, (ख) (iii) इब्राहिम गार्दी

(ग) (ii) अफगान लुटेरा शासक (घ) (ii) अल्लाह

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए—

प्राण—जीवन, युद्ध—लड़ाई, घृणा—नफरत, वध—हत्या, पानी—जल

(7) निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से वाक्य बनाइए—

(*) घृणा—किसी से घृणा करना मानवहित में नहीं।

(*) नौकर—रामलाल एक स्वामीभक्त नौकर है।

(*) फरिश्ता—जरूरतमंद की मदद फरिश्ता बनकर करना चाहिए।

(*) अनुरोध—राम ने अनुरोध कर श्याम को बुलाया।

(*) घायल—पानीपत की तीसरे युद्ध में अनेक लोग घायल हुए।

(*) देशभक्ति—देशभक्ति का आनंद ही कुछ विशेष होता है।

(8) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

क्रोध—प्यार, पीड़ा—आराम

पास—दूर, ठंडा—गरम

इच्छा—अनिच्छा

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

पुनरावृत्ति प्रश्न-पत्र-2

(पाठ 8 से 14 पर आधारित)

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) गाँववालों को प्रायः यह शिकायत रहती थी कि जो अध्यापक यहाँ आते हैं, वे बच्चों को ठीक से नहीं पढ़ाते हैं। अधिकतर छुट्टी पर रहते हैं।

(ख) श्रमिकों ने टीला खोदकर उसे खोला तो उसके नीचे काले संगमरमर का चौकोर तख्त पाया जो पत्थर के बत्तीस देवदूतों के हाथों और पंखों पर टिका हुआ था। अवश्य ही वह विक्रमादित्य का सिंहासन था।

(ग) 'छड़ी मुबारक' श्रीनगर के शंकराचार्य मंदिर में प्रस्थापित शिवलिंग का प्रतीक है।

(घ) रहीम ने प्रेम संबंध तोड़ने से इसलिए मना किया है क्योंकि प्रेम का धागा एक बार टूट जाने पर जुड़ नहीं पाती है और अगर वह जुड़ भी गई तो उसमें एक गाँठ पड़ जाती है।

(ङ) श्यामू की पतंग देखकर उसके पिता विश्वेश्वर बहुत नाराज हुए क्योंकि श्यामू ने पतंग खरीदने के लिए अपने पिता की कोट से पैसा निकाला था।

(2) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) प्रौढ़ पाठशाला, (ख) (iii) उज्जैन,

(ग) (ii) मित्रों, (घ) (ii) सम्मान (ङ) (ii) खड़े

(3) सही शब्द रिक्त स्थान भरिए—

(क) चुनौतियाँ, (ख) झील, (ग) बिक्री, (घ) अनमने, (ङ) उपस्थिति

(4) सही के सामने (✓) व गलत के सामने (x) का चिह्न लगाइए—

(क) —(x), (ख) (✓) (ग) —(x), (घ) —(✓), (ङ) —(✓)

(15) क्या निराश हुआ जाए?

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) आजकल प्रत्येक व्यक्ति दोषी इसलिए नजर आता है क्योंकि समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि अब ऐसा लगता है, मानों देश में कोई ईमानदार आदमी रहा ही नहीं। हर व्यक्ति को संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने भी ऊँचे पद पर है, उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

(ख) लेखक के अनुसार वे लोग कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते हैं क्योंकि ये लोग धर्मभीरु होते हैं।

(ग) लेखक हताश नहीं होने की सलाह इसलिए दे रहा है क्योंकि जो कुछ भी हमें ऊपर-ऊपर दिखायी दे रहा है, वही हाल की मनुष्य-निर्मित नीतियों की त्रुटियों की देन है। मनुष्य-बुद्धि सदैव नयी परिस्थितियों का सामना करने के लिए नए सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है, उनके ठीक साबित न होने पर उन्हें बदलती है। नियम-कानून सबके लिए एक जैसे बनाए जाते हैं, पर कभी-कभी एक ही नियम सबके लिए सुखकर नहीं होता है।

सामाजिक कायदे-कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते हैं, इससे ऊपरी सतह आलौकिक भी होती है, पहले भी हुई है, आगे भी होगी। उसे देखकर हताश हो जाना ठीक नहीं है।

(घ) लेखक ने कानून और धर्म की व्याख्या इस प्रकार की है कि भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है।

आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते हैं।

(ड) एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से लेखक ने दस के बजाए सौ रुपए का नोट दिया और वह जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकेंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने लेखक को पहचान लिया। और बड़ी विनम्रता के साथ लेखक के हाथ में नब्बे रुपए रख दिए और बोला, “यह मेरी बहुत बड़ी गलती थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।” उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। लेखक चकित रह गया।

अब लेखक कैसे कहे कि दुनिया से सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना घटी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार लेखक बस में यात्रा कर रहा था। लेखक के साथ उनकी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रूक-रूक कर चलती थी। गंतव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दिया। रात में कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर तुरंत एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है। बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, “यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था।” परिवार सहित अकेला लेखक ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था। कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से लेखक की ओर देखने लगा और बोला, “हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं। बचाइए, ये लोग मारेंगे।” डर तो लेखक के मन में भी था पर उसकी कातर मुद्रा देखकर लेखक ने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है, परंतु यात्री इतने घबरा गए कि लेखक की बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, “इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।”

लेखक भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गए। लेखक के बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। लेखक व पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं पर उसे बस से उतारकर एक जगह घेरकर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो पहले ड्राइवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। लेखक के गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। किसी समय लेखक क्या देखता है कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने ही कहा, “अड्डे से नई बस लाया हूँ, इस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है।” फिर लेखक के पास एक लोटे में पानी व दूध लेकर आया और बोला, “पंडितजी! बच्चों का रोना मुझसे देखा न गया।” यहीं दूध मिला, तो थोड़ा लेता आया। यात्रियों में फिर जान आई। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गए। लेखक कैसे कहे कि मनुष्यता कभी समाप्त हो गई।

लेखक कैसे कहे कि लोगों में दया-ममता रह ही नहीं गई। जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं, जिन्हें लेखक भूल नहीं सकता।

(2) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) तस्कारी, भ्रष्टाचार, (ख) निरीह (ग) मनीषियों, (घ) पर्याय

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) लेखक के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है।

(ख) एक बड़े बहुत आदमी ने लेखक से यह कहा था कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ। मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच ली हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान् भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी। मेरे मना निराशा होने की जरूरत नहीं है।

(ग) ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) सौ रुपए, (ख) (iii) निर + जन,

(ग) (iii) भारतीय, (घ) (i) घबरा जाना, (ड) (iii) समाचार पत्रों में ठगी, डकैती आदि के समाचार भरे रहने के

कारण

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी पर ○ गोला लगाइए—

स्टेशन, ईमानदारी, मूर्खता, प्रत्यारोप

(7) निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए—

(*) भारतवर्ष—भारतवर्ष एक महान देश है।

(*) ईमानदारी—ईमानदारी का फल मीठा होता है।

(*) भ्रष्टाचार—समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, भ्रष्टाचार आदि के समाचार भरे पड़े रहते हैं।

(8) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

ईमानदार—बेईमान

गुण—अवगुण

सभ्य—असभ्य

धर्म—अधर्म

उपस्थित—अनुपस्थित

उचित—अनुचित

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(16) मैं सबसे छोटी होऊँ

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) बालिका माँ का आँचल पकड़कर घूमने की बात कह रही है।

(ख) 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' से तात्पर्य यह है कि बालिका इतनी बड़ी नहीं होनी चाहती कि माँ के स्नेह से वंचित हो जाए। वह इतनी बड़ी नहीं होनी चाहती कि माँ के आँचल में ईर्ष्यारहित व भय से रहित छाया न प्राप्त कर सके।

(ग) माँ अपने बच्चे का मुँह धोकर उसे सुसज्जित करती है।

(घ) बच्ची माँ से यह देखने को कह रही है कि माँ पहले तुम मुझे बड़ा बनाती हो और फिर मुझे देखने के लिए तुम मेरे पीछे चलती हो। पहले की तरह तुम मेरा हाथ पकड़कर सदैव दिन-रात नहीं चलती हो।

(2) नीचे दिए गए पंक्तियों का भावार्थ लिखिए—

(*) बड़ा बनाकर पहले हमको, तू पीछे चलती है माता! हाथ पकड़कर फिर सदा हमारे, साथ नहीं फिरती दिन-रात!

भावार्थ—माँ तुम मुझे पाल-पोसकर बड़ा कर देती हो और फिर मेरे पीछे चलती हो। तुम पहले की तरह हाथ पकड़कर फिर सदा हमारे साथ दिन-रात नहीं घूमती हो।

(*) अपने कर से खिला, धुला मुख, धूल, पोंछ सज्जित कर गाता थमा खिलौने, नहीं सुनाती, हमें सुखद परियों की बात!

माँ तुम मुझे अपने हाथों से खिलाकर, मुँह को धुलाकर, धूल आदि पोछकर मुझे सजाती हो। हाथों में खिलौने पकड़कर हमें सुखद परियों की कहानी नहीं सुनाती हो।

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) 'तेरा आँचल पकड़-पकड़ फिरूँ सदा माँ तेरे साथ का भावार्थ है कि बालिका इतनी छोटी बनी रहना चाहती है कि स्नेहपूर्वक अपनी माँ की आँचल पकड़-पकड़कर घूमती रहे और उसका हाथ कभी न छोड़े।

(ख) 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' से बालिका का अभिप्राय यह है कि वह इतनी बड़ी नहीं होना चाहती है कि अपनी माँ का आँचल पकड़कर घूम न सके।

(ग) 'तेरे आँचल की छाया में छिपी रहूँ निस्पृह, निर्भय से तात्पर्य यह है कि बालिका अपनी माँ की आँचल की छाया में ईर्ष्यारहित एवं भय से रहित छिपी रहकर चन्द्र के उदय को देख सके।

(घ) बालिका अपनी माँ के आँचल की छाया में छिप कर निर्भय रहना चाहती है।

(ङ) प्रस्तुत कविता के रचयिता 'श्री सुमित्रानन्दन पंत जी' हैं।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) माँ की,

(ख) (i) अपनी बेटी को

(ग) (ii) चंद्रोदय

(घ) (ii) हाथ

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) सही मिलान कीजिए—

पकड़-पकड़ कर-हाथ, कभी न छोड़ूँ-आँचल,
अपने कर से-खिला, परियों की बात-सुखद

(7) तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए-

माँ-जननी, माता, मम्मी

चन्द्र-चन्द्रमा, राशि, रजनीश

(8) विलोम शब्द लिखिए-

निर्भय-भय, सुखद-दुःखद, सदा-कभी-कभी।

(9) निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए-

| समास विग्रह | समास का नाम |
|---------------------------|----------------|
| आजन्म-जिसका जन्म न हुआ हो | बहुब्रीहि समास |
| नीलकण्ठ-जिसका कंठ नीला हो | तत्पुरुष समास |

(10) विशेषण बनाइए-

| | | |
|--------------|---------------|-----------|
| पहाड़-पहाड़ी | कीमत-कीमती | घर-घरवाला |
| रोग-रोगी | गंभीरता-गंभीर | रंगीन-रंग |

(11) लिंग-निर्णय कीजिए-

| | | |
|-----------------|----------------|--------------|
| आँचल-स्त्रीलिंग | माँ-स्त्रीलिंग | मुख-पुल्लिंग |
| शरीर-पुल्लिंग | परी-स्त्रीलिंग | हाथ-पुल्लिंग |

(12) इन शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

| | | |
|-------------|----------|-----------|
| आँख-चक्षु | दिन-दिवस | आग-अग्नि |
| सपना-स्वरूप | ऊँचा-ऊँच | दूध-दुग्ध |

क्रियात्मक गतिविधियाँ-स्वयं कीजिए।

(17) आदर्श माता जीजाबाई

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) जीजाबाई के पिता का नाम श्री लखूजी जाधवराव था।

(ख) शिवाजी का लालन-पालन अपनी माँ जीजाबाई द्वारा अपने पूर्वजों के शौर्य और देश के प्राचीन वैभव सुनाते हुए उनके हृदय में साहस, वीरता और महत्वाकांक्षा की भावनाएँ भरते हुए हुआ था। रामायण और महाभारत की कहानियाँ शिवाजी बड़े चाव से सुनते। फलस्वरूप कथा-पुराण सुनने और देवताओं में आस्था रखने की प्रवृत्ति बाल्यकाल से ही हो गयी थी। इस प्रकार माता जीजाबाई की शिक्षा पाकर शिवाजी का धर्मनिष्ठ, मातृत्व एवं महत्वाकांक्षी वीर युवक के रूप में विकास हुआ।

(ग) एक बार माता जीजाबाई ने शतरंज के खेल में शिवाजी को मात दे दी। शिवाजी ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली और कहा, “माँ, आप इस जीत के लिए मुझसे कुछ भी माँग लो।” माँ बोली, “अगर देना ही चाहते हो तो मुझे सिंहगढ़ का दुर्ग दो।”

सिंहगढ़ का पहाड़ी दुर्ग मुगलों के हाथ में था और वह अजेय समझा जाता था। उदयभानु नामक एक राजपूत सरदार मुगलों की ओर से उसका प्रबंध करता था। उदयभानु के पास बहुत बड़ी मुगल सेना थी, यह शिवाजी को भली-भाँति ज्ञात था। अतः उन्होंने अपने मित्र तानाजी मालसुरे के पास संदेश भेजा कि माता जीजाबाई तुरंत बुला रही हैं। तानाजी अपने पुत्र के विवाह की तैयारी में लगे थे, परंतु जीजाबाई का संदेश पाते ही वे चल पड़े। यह ज्ञात होने पर कि उन्हें सिंहगढ़ जीतना है, अपने छोटे भाई सूर्याजी को लेकर उन्होंने एक हजार सैनिकों के साथ सिंहगढ़ को घेर लिया। भयंकर युद्ध हुआ जिसमें उदयभानु और तानाजी दोनों मारे गए। किला मराठों के हाथ आ गया।

(घ) लेखक ने जीजाबाई को वीरमाता इसलिए कहा क्योंकि माता जीजाबाई शिवाजी के स्वतंत्र विचारों की सराहना करतीं और उन्हें अलग राज्य स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करतीं, जिससे आत्मसम्मान की रक्षा हो सके।

(ङ) जीजाबाई ने शिवाजी को स्त्री मात्र का आदर करने की शिक्षा दी थी। इसीलिए शिवाजी ने अपने सैनिकों को विशेष रूप से आज्ञा दे रखी थी कि युद्ध में कभी भी स्त्रियों को बंदी न बनाया जाए और यदि कभी शत्रु-पक्ष की कोई स्त्री मिल जाए तो उसे

सम्मानपूर्वक उसके संरक्षकों को पास भेज दिया।

जब शिवाजी के सेनापति आवाजी सोनदेव ने कल्याण प्रदेश के शासक मुल्ला अहमद की सुंदर पुत्र-वधू को बंदी बना लिया, तो शिवाजी ने उस बंदिनी में अपनी माँ के ही दर्शन किए और उसे बड़े आदर के साथ उसके ससुर के पास भेज दिया। धर्म के संबंध में जीजाबाई बड़ी उदार हृदया थीं और उनकी इस उदारता की शिवाजी पर पूरी छाप थी।

(2) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) होली (ख) नौकरी (ग) शिवाजी, (घ) मुगलों, (ङ) सभी धर्मों

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) जीजाबाई शिवाजी की आदर्श माता थीं।

(ख) जाघवराव अहमदनगर के निजामशाह के दरबार में प्रभावशाली सरदार थे। उनके अधिकार में दस हजार सवार थे, जिनके खर्च के लिए पर्याप्त जागीर मिली हुई थी।

(ग) शिवाजी का जन्म 10 अप्रैल, सन् 1627 ई. को हुआ था। इनका नाम शिवाजी शिवाई देवी के नाम पर रखा गया।

(घ) शिवाजी को अपने पिता का बीजापुर के सुल्तान को झुककर सलाम करना अच्छा नहीं लगता था। वे माता जीजाबाई से आकर दरबार की बातें और पिता की आलोचना करते थे।

(ङ) पिता ने शिवाजी को माता के साथ पूना इसलिए भेज दिया क्योंकि बालक शिवाजी को दरबारी जीवन पसंद नहीं थे। पूना में रहकर शिवाजी स्वतंत्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे और वहीं उन्होंने अपनी माता से जागीर-प्रबंध की शिक्षा ग्रहण की।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (i) मालोजी (ख) (ii) निजामशाह (ग) (ii) मुख्यमंत्री,

(घ) (i) बीजापुर (ङ) (iii) जांगीर

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए।

(6) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए—

(*) अस्त्र (हाथ में लेकर लड़ने वाला हथियार)—युधिष्ठिर माला नामक **अस्त्र** चलाने में महारत हासिल थी।

(*) शस्त्र (चलाकर मारने वाले हथियार)—अर्जुन धनुर्विद्या **शास्त्र** में निपुण था।

(*) अमूल्य (जिसका कोई मूल्य नहीं)—व्यक्ति का जीवन **अमूल्य** होता है।

(*) बहुमूल्य (अत्यधिक मूल्यवान)—समय से **बहुमूल्य** कुछ भी नहीं है।

(*) पाप (बुरा कर्म)—हर व्यक्ति को **पाप** कर्म से बचाना।

(*) अपराध (गलत काम)—लालच **अपराध** को बढ़ावा देता है।

(*) प्रयोग (क्रियाविधि)—**प्रयोग** कार्य विज्ञान का अभिन्न हिस्सा है।

(7) संधि-विच्छेद कीजिए—

कालान्तर = काल + अन्तर

शहीरांत = शरीर + अंत

महत्वाकांक्षा = महत्व + अकांक्षा

मातृभक्त = मातृ + भक्त

(8) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

राजा = महिपति, नरेश, नृप

माता = जननी, माँ, मम्मी

पिता = पापा, बाबूजी, डैडी

(9) समास-विग्रह कीजिए—

प्रतिदिन = दिन-दिन

यथावसर = जैसा अवसर

आजीवन = जीवन भर

आमरण = अनिश्चित कालीन

बेरोजगार = बिना रोजगार के

सपरिवार = परिवार सहित

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(18) सर्वोत्तम औषधि : हँसी

(क) लेखक के अनुसार सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में आनंद रूपी मंत्र सुनाता है। उत्तम सुअवसर की हँसी उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है। आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है कि उससे शोक और दुःख की दीवारों को ढहा सकते हैं। प्राण रक्षा के लिए सदा सब देशों में उत्तम-से-उत्तम उपाय चित्त को प्रसन्न रखता है।

(ख) हँसी को उत्तम औषधि इसलिए माना गया है क्योंकि व्यक्ति जितना भी अधिक आनंद से हँसेगा, उसकी आयु उतनी ही बढ़ेगी।

(ग) लेखक ने हँसने-हँसाने वालों को धन्य इसलिए माना है क्योंकि उनकी बातों से शरीर में रक्त आनंदित होकर नाच उठता है। हँसी मन में नित्य नई उमंगें पैदा करती है। हँसी चिंता को दूर भगाती है और कष्टों को झेलने में सहायता करती है।

(घ) डॉक्टर ने कौवे के घोंसले की कहानी अपने मित्रों को हँसाने के लिए सुनाई।

(ङ) कारलाइल के अनुसार जो कि एक राजकुमार था हँसाने का अलग-अलग लोगों पर यह प्रभाव पड़ता है कि हमारे जीवन का उद्देश्य केवल हँसी ही नहीं है, हम सभी को बहुत काम करने हैं। तथापि उन कामों में, कष्टों में और चिंताओं में एक सुंदर आंतरिक हँसी, बड़ी प्यारी वस्तु भगवान में दी है।

(2) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) आनंद (ख) हँसोगे (ग) आनंद सी
(घ) शुभ संवाद (ङ) विशेषकर

(3) सौच-समझकर बताइए—

(क) लेखक जीवन में सबसे प्यारा हँसी को मानता है।
(ख) प्रस्तुत अध्याय 'श्री बालमुकुंद गुप्त जी' द्वारा लिखित है।
(ग) लेखक के अध्याय में एक अंग्रेज डॉक्टर, कारलाइल नामक राजकुमार और कौवे के घोंसले की कहानी सुनाई।
(घ) हँसी को उत्तम औषधि कहा गया है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) आनंद, (ख) (iii) भरोसा करेगा
(ग) (ii) आशा बढ़ेगी (घ) (i) धन्य

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए—

(*) सूतक—(अछूत)—सूतक अवधि में कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।
(*) जिंदादिली—(दरियादिली) जिंदगी जिंदादिली का नाम है।
(*) आनंदरूपी—(खुशी के समान)—हँसी से ज्यादा आनंदरूपी कार्य कुछ भी नहीं है।
(*) चित्त (मन)—शांत चित्त से किसी कार्य को करना।
(*) औषधि (दवाई)—प्रसन्नता सबसे अच्छी औषधि होती है।
(*) शक्तिशाली (ताकतवर)—हँसी स्वस्थ रहने का शक्तिशाली माध्यम है।
(*) लाभकारी (फायदेमंद)—राम ने श्याम को एक लाभकारी कार्य करने का सुझाव दिया।

(7) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

आनंद—उदास, बाहरी—भीतरी
हँसना—रोना, विद्वान—गँवार
जीवन—मृत्यु, मनुष्य—पशु
प्रसन्न—अप्रसन्न, उत्तम—खराब

(8) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

प्यारी—प्रिया, सखी, सहेली।
सदा—सदैव, हमेशा, निरंतर।

मनुष्य—मानव, व्यक्ति, इंसान।

प्राण—जीवन, जान, जिंदगी।

प्रिय—सखा, दोस्त, मित्र।

(9) निम्नलिखित शब्दों के लिंग निर्धारित कीजिए—

डॉक्टर—पुल्लिंग

शरीर—पुल्लिंग

हँसी—स्त्रीलिंग

आनंद—पुल्लिंग

आयु—स्त्रीलिंग

पुस्तक—स्त्रीलिंग

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(19) शहीद बकरी

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) अन्य बकरियाँ युवा बकरी के निर्णय को मूर्खतापूर्ण इसलिए समझती थीं क्योंकि शिकारी के भय से शत्रुमुर्ग रेत में अपनी गर्दन छुपा लेता है लेकिन शिकारी उसे बख्शाता नहीं है। साथियों ने उसे आँखों-आँखों में समझाने का प्रयास किया कि पहाड़ पर चढ़ने जैसे मूर्खतापूर्ण विचारों को मन में न लाए। भाग्य सदैव भोगने के लिए ही उत्पन्न होते रहे हैं। भेड़िये के मुँह हमारा खून लग चुका है, वह अपनी आदत से बाज नहीं आएगा।

(ख) युवा बकरी अपने बाड़े से निकलकर इसलिए भागी थी क्योंकि वह भेड़िये के मुँह में लगे खून को ही देखना चाहती थी। वह किस तरह झपटता है, यह करतब देखने की उसकी लालसा बलवती हो गयी।

(ग) युवा बकरी की प्रशंसा करने के पीछे भेड़िए का उद्देश्य उस युवा बकरी को मारना था।

(घ) बकरी तो मर गई, परंतु वह भेड़िए को घायल करके मरी है। क्योंकि वह भी दूसरों पर अत्याचार करने के लिए जीवित नहीं रह सकेगा। सीने और मस्तक के घाव उसे सड़-सड़कर मरने को बाध्य करेंगे।

(ङ) प्रस्तुत पाठ द्वारा लेखक यह संदेश देना चाहता है कि हमें अपना जीवन बिना किसी भय के जीना चाहिए और हर मुश्किलों का डटकर सामना करना चाहिए।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) चरवाहे

(ख) गरदन

(ग) सुंदर,

प्यारी, (घ) बकवास,

(ङ) जी-जान

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) बकरियों ने मौत से बचने के लिए बाड़े में कैद रहकर जुगाली करते रहना इसलिए उचित समझा क्योंकि जब हरे-भरे पहाड़ पर बकरियाँ घास चरने जातीं तो रोज दूसरे-तीसरे दिन एक-न-एक बकरी कम हो जाती थी।

(ख) युवा बकरी अपने बाड़े से निकल भागी और पर्वत पर चढ़कर स्वच्छंद विचरती, कूदती, फाँदती, दिन भर पहाड़ पर चरती रही। भेड़िए को देखने की उत्सुकता भी बनी रही। लेकिन उसके दर्शन न हुए। जब वह नीचे उतरने लगी तो रास्ते में दबे पाँव भेड़िया आता हुआ दिखायी दिया।

रक्तरंजित आँखें, लपलपाती जीभ और आक्रमणकारी चाल से वह सब कुछ समझ गयी।

(ग) बकरी ने जब आक्रमण किया तो असावधान भेड़िया सँभल न सका। यदि बीच का भारी पत्थर उसे सहारा न देता तो औंधे मुँह नीचे गार में गिर गया होता।

भेड़िए की जिंदगी में यह पहला अवसर था। वह किंकर्तव्यविमूढ़-सा हो गया। टक्कर खाकर अभी वह सँभल भी न पाया था कि बकरी ने पैने सींग उसके सीने में इतने जोर से लगे कि वह चीख उठा। क्षत-विक्षत सीने से लहू की बहती धार देखकर भेड़िए के पाँव उखड़ गए।

(घ) बकरी की मृत्यु पर मैना को गर्व इसलिए हुआ कि बकरी मर जरूर गई, परंतु भेड़िए को घायल करके भरी है। वह भी अब दूसरों पर अत्याचार करने के लिए जीवित नहीं रह सकेगा। सीने और मस्तक के घाव उसे सड़-सड़कर मरने को बाध्य करेंगे।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (i) उतरकर,

(ख) (ii)

पहाड़ पर

(ग) (i) भेड़िए को सबक सिखाना,

(घ) (ii) युवा बकरी ने।

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

सुंदर—बदसूरत सावधान—असावधान मूर्ख—चतुर
सहारा—बेसहारा स्वतंत्र—परतंत्र ऊपर—नीचे

(7) निम्नलिखित मुहावरों को लिखकर वाक्य बनाइए—

- (*) बाज आना—(छोड़ना)—तुम अपनी बुरी आदतों से क्यों नहीं बाज आते।
- (*) लहू में उबाल आना—(खून खौलना)—लहू को देखकर अब भेड़िए के लहू में भी उबाल आ गया।
- (*) ढेर हो जाना—(मरना)—साथियों की अकर्मण्यता पर तरस खाती हुयी बेचारी बकरी ढेर हो गयी।
- (*) पाँव उखड़ जाना—(भाग जाना)—दुश्मन सेना के पाँव उखड़ गए।

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(20) छोटा जादूगर

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

- (क) छोटे जादूगर के माँ बीमारी की स्थिति में एवं बाबूजी जेल में थे।
- (ख) लेखक छोटा जादूगर पर गुस्सा इसलिए हो रहा था क्योंकि वह जल अभी जलपान कर रहे थे और छोटा जादूगर उन्हें खेल दिखाने की जिद्द कर रहा था।
- (ग) छोटे जादूगर के पास जादू दिखाने के लिए उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे।
- (घ) छोटा जादूगर तमाशा माँ की दवा व अपना पेट भरने के लिए दिखा रहा था।
- (ङ) लेखक के अनुसार छोटा जादूगर विकट स्थिति में भी अपना जीवन खुश होकर जीने वाला लड़का था।

(2) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए—

- (क) कार्निवल (ख) शरबत (ग) जेल (घ) एक रुपया (ङ) ऑफिस

(3) सोच-समझकर बताइए—

- (क) बालक जादू माँ की दवा व अपना पेट भरने के लिए दिखाता था।
- (ख) लेखक के छोटे जादूगर को जादू दिखाने के लिए इसलिए मना किया क्योंकि उस समय वह जलपान कर रहे थे।
- (ग) लेखक की पत्नी ने छोटे जादूगर को एक रुपया दिया।
- (घ) लेखक को छोटे जादूगर पर दया इसलिए आई क्योंकि आज उसे अपनी माँ के पास जाना था, लेकिन वह फिर भी पेट भरने के कारण खेल दिखलाने चला आया।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

- (क) (iii) जयशंकर प्रसाद (ख) (ii) माँ के इलाज के लिए
- (ग) (iii) लेखक की पत्नी से उसने पैसे ठगे थे।
- (घ) (i) वह छोटा बच्चा माँ का इलाज करवाता था।

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए।

(6) निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए—

- (*) विषाद—प्रत्येक समझदार व्यक्ति को विषाद से बचना चाहिए।
- (*) अविचल—हमें अविचल बुद्धि से कार्य करना चाहिए।
- (*) अकस्मात्—तुम अकस्मात् ही कैसे आ गए।
- (*) स्मरण—वैज्ञानिकों की स्मरण शक्ति तीव्र होती है।
- (*) वाणी—वाणी दोष सर्वश्रेष्ठ दोष होता है।

(7) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए—

पत्ता—पत्ते मित्र — मित्रों

दुकान – दुकानें

भूल – भूलें

सड़क – सड़कें

लड्डू – लड्डुएं

(8) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

मोटा – पतला

गर्मी – ठंडी सुंदर – बदसूरत

रूठना – मनाना

इच्छा – अनिच्छा जमीन – आसमान

(9) पर्यायवाची शब्द लिखिए—

माँ – माता, जननी

संध्या – सायं, शाम

मनुष्य – मानव, मानुष

संसार – विश्व, जगत

क्रियात्मक गतिविधियां—स्वयं कीजिए।

(21) शक्ति और क्षमा

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) युद्धिष्ठिर ने दुर्योधन को हटाने के लिए दया व क्षमाशीलता का सहारा लिया लेकिन दुर्योधन ने इसे कायरता समझा फलस्वरूप महाभारत जैसे विनाशकारी महायुद्ध हुआ।

(ख) कविता में कवि 'श्री रामधारी सिंह दिनकर' युद्धिष्ठिर को सम्बोधित कर रहे हैं।

(ग) क्षमावान शत्रु सामने होने पर युद्ध कुछ समय के लिए तो टल जाता है लेकिन अंतिम परिणाम घातक होता है।

(घ) दुर्योधन युद्धिष्ठिर के क्षमा, दया, विनीत और नम्र होने के गुण को उनकी कायरता समझता था।

(ङ) शत्रु पौरुष से भयभीत होकर हार मानता है।

(2) कविता की छूटी हुई पंक्तियाँ लिखिए—

(क) दुष्ट कौरवों ने तुमको कायर, समझा उतना ही।

(ख) उसको क्या जो दंतहीन, विषरहित, विनीत, सरल हो।

(ग) बैठे पढ़ते रहे छंद, अनुनय के प्यारे-प्यारे।

(घ) उठी अधीर धधक पौरुष से, आग राम के शर से।

(ङ) संधि-वचन समपूज्य उसी का, जिसमें शक्ति विजय की।

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) प्रस्तुत कविता के रचयिता 'रामधारी सिंह दिनकर' है।

(ख) प्रस्तुत कविता कवि के शक्ति और क्षमा रचना से उद्धृत है।

(ग) प्रस्तुत कविता की पृष्ठभूमि पांडवों-कौरवों के बीच हुए महाभारत युद्ध से एवं राम श्री राम द्वारा समुद्र सेतु से है।

(घ) प्रस्तुत कविता में वक्ता की भूमिका का निर्वहन स्वयं कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर ने किया है।

(ङ) प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव यह है कि पुरुषार्थ के बिना लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकता है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) हिंसक था,

(ख) (ii) क्षमाशील थे

(ग) (ii) शक्ति

(घ) (iii) जब श्रीराम ने धनुष पर बाण चढ़ाया तो समुद्र ने घबराकर उनकी बात मानी थी,

(ङ) (iii) शक्ति

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए—

समुद्र—सागर, जलाधि, पयोधि

राम—विष्णु, पुरुषोत्तम, हरि

आत्र—अग्नि, अनल, पावक

(7) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए—

| | | |
|------------------|-----------------|----------------|
| नर—पुल्लिंग | बाण—पुल्लिंग, | व्याध—पुल्लिंग |
| शक्ति—स्त्रीलिंग | रघुपति—पुल्लिंग | सिंधु—पुल्लिंग |
| दया—स्त्रीलिंग | क्षमा—पुल्लिंग | त्याग—पुल्लिंग |

(8) संधि-विच्छेद कीजिए—

| | |
|-----------------------|-------------------------|
| जलाशय = जल + आशय | कदापि = कदा + अपि |
| विषाक्त = विः + अक्त | विद्यालय = विद्या + आलय |
| जीवनधार = जीवन + आधार | उल्लास = उत् + लास |

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(22) प्यारे और निराले जीव

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) बंदरों ने घर में घुसकर फ्रिज खोलकर फल-सब्जियाँ खा ली थीं। इन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि हमने इनका घर उजाड़ है। हमने जंगलों का विनाश कर दिया है। एक-एक पेड़ पर न जाने कितने पशु-पक्षी निर्भर थे, हमने उन्हें नष्ट कर दिया। इसीलिए बंदर अब लोगों की बस्तियों में आ गए हैं।

(ख) जीवों का जीना दूभर करने वाले हम ही तो हैं।

(ग) 'विश्व कल्याण दिवस' 4 अक्टूबर को पूरी दुनिया में मनाया जाता है।

(घ) प्रकृति में संतुलन बनाए रखने में ये सभी जीव हमारी सहायता करते हैं।

(2) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) संतुलन (ख) हिंद महासागर (ग) विश्व जीव कल्याण दिवस (घ) विनाश

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) शहरों की गलियों में भूखी गाय कूड़ा-करकट, पॉलिथीन के थैले और पैकेट खा रही हैं।

(ख) डोडो एक पक्षी था। कबूतरों का बिरादर लेकिन बत्तख से बड़ा और भारी। उड़ नहीं सकता था। मॉरिशस और हिंद महासागर के तमाम अन्य द्वीपों में वे बहुत बड़ी संख्या में पाए जाते थे, लेकिन सन् 1507 में वहाँ पुर्तगाली लोग पहुँचे और उन्होंने भोले-भाले डोडो को मार-मारकर खाना शुरू कर दिया। कितने दुःख की बात है कि सन् 1681 में डोडो का नमोनिशान इस दुनिया से मिट गया। आज हम केवल किताबों में ही उसका चित्र देख सकते हैं।

(ग) 'विश्वजीव कल्याण दिवस' 4 अक्टूबर को पूरी दुनिया में मनाया जाता है ताकि हमारा ध्यान जीवों की ओर जाए, लेकिन सच्चाई यह है कि इन प्यारे और निराले जीवों के साथ लगातार क्रूरता का व्यवहार किया जा रहा है।

(घ) प्रत्येक देश के नागरिकों का कर्तव्य यह है कि सभी देशों में अनेक प्रकार के वन्य जीव-जन्तु हैं। इनका संरक्षण हमारा कर्तव्य है। इसके बावजूद भी प्रत्येक देश के नागरिकों का यह भी कर्तव्य होना चाहिए कि पर्यावरण-संरक्षण तथा वन्य जीवों के संरक्षण में पूर्ण भागीदारी दे ताकि हमारी भावी पीढ़ी भी स्वस्थ और सुंदर पर्यावरण को लाभ एवं आनंद उठा सके।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) फल और सब्जियाँ, (ख) (ii) 4 अक्टूबर

(ग) (i) एक पक्षी (घ) (i) लाल पांडा

(ङ) (iii) 1681 में

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए—

(*) अधिनियम—भारत पहला देश है, जहाँ वन्य-जीव संरक्षण अधिनियम बना।

(*) कार्यालय—अगले महीने कार्यालय के काम से मुझे दिल्ली जाना है।

(*) पर्यावरण—हमें स्वस्थ एवं सुंदर पर्यावरण का लाभ एवं आनंद उठाना चाहिए।

(*) नष्ट—हमें समय नष्ट नहीं करना चाहिए।

(*) क्रूरता—शिकारी ने शेर को क्रूरता से मार दिया।

(7) निम्नलिखित शब्दों का बहुवचन रूप लिखिए—

| | |
|-----------------|-----------------|
| फल—फलें, | सब्जी—सब्जियाँ— |
| पक्षी—पक्षियाँ, | दवीप—दवीपों |
| किताब—किताबें, | जीव—जीवों |

(8) निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए—

| | |
|-----------------|--------------|
| हँसना = हँसी, | भूलना = भूल |
| सुंदर = सुंदरता | साफ = सफाई |
| दुःखी = दुःखी | शौकिया = शौक |

(9) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

| | |
|------------------|-------------------|
| समस्या = समाधान | आवश्यक = अनावश्यक |
| विनाश = विकास | क्रूरता = उदारता |
| संतुलन = असंतुलन | लुप्त = प्रकट |

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

पुनरावृत्ति प्रश्न-पत्र-3

(पाठ 15 से 21 पर आधारित)

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) बालिका निर्भय अपनी माँ के आँचल की छाया में छिपकर रह सकती है।

(ख) पिता ने शिवाजी को माता के साथ पूना इसलिए भेज दिया क्योंकि बालक शिवाजी को दरबारी जीवन पसंद नहीं थे। पूना में रहकर शिवाजी स्वतंत्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे और वहीं पर उन्होंने अपनी माता से जागीर-प्रबंध की शिक्षा ग्रहण की।

(ग) हँसी को उत्तम औषधि इसलिए कहा गया है क्योंकि व्यक्ति जितना भी अधिक आनंद से हँसेगा, उसकी आयु उतनी ही बढ़ेगी।

(घ) युवा बकरी अपने बाड़े से निकलकर इसलिए भागी थी क्योंकि वह भेड़ों के मुँह में लगे खून को ही देखना चाहती थी। वह किस तरह इन पर झपटता है, यह करतब देखने की उसकी लालसा बलवती हो गयी।

(ङ) शत्रु पौरुष से भयभीत होकर हार मानता है।

(2) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

| | |
|-----------------|-------------------|
| (क) (iii) माँ, | (ख) (i) मालोजी |
| (ग) (i) धन्य | (घ) (i) युवा बकरी |
| (ङ) (iii) हिंसक | |

(3) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

| | | | |
|-----------|-----------|-----------|------------|
| (क) मन, | (ख) सेना, | (ग) खुशी, | (घ) बकवास, |
| (ङ) जगमगा | | | |

(4) सही के सामने (✓) व गलत के सामने (×) चिह्न लगाइए—

(क) (✓), (ख) (✓), (ग) (×), (घ) (✓), (ङ) (✓)

आदर्श प्रश्न-पत्र

(1) निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) कवि ने 'दीवाना' शब्द का प्रयोग स्वतंत्र भाव से जीवन जीने वाले मस्त व्यक्तियों के लिए किया है।

(ख) एनी बेसेंट का जन्म लंदन में अक्टूबर 1847 में हुआ था। उनके बचपन का नाम एनीवुड था। वह अपने आपको आयरिश कहलाना अधिक पसंद करती थीं, क्योंकि उनकी माँ आयरिश थीं। एनी अपनी माँ से बहुत प्यार करती थीं। एनी के पिता एक बड़े विद्वान थे। उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान था। जब एनी केवल पाँच वर्ष की थीं तो उनके पिता की मृत्यु हो गई।

दिसंबर 1867 में एक पादरी फ्रैंक बेसेंट के साथ एनी का विवाह हुआ। पति-पत्नी की इच्छाओं और भावनाओं में जमीन-आसमान का अंतर था। फिर भी जीवन जैसे-तैसे चलता रहा। वह दो बच्चों की माँ भी बन गई थीं, परंतु दोनों बच्चे निरंतर बीमार रहने लगे। सन् 1873 ई. में केवल 26 वर्ष की आयु में एनी बेसेंट घर से निकाल दी गई और वह सच्चाई की खोज में आगे बढ़ चलीं।

(ग) तात्या टोपे ने लड़ते हुए स्वर्ग प्राप्ति या स्वतंत्र भारत के प्राप्ति की बात की थी।

(घ) भगत सिंह अपना घर छोड़ने के लिए इसलिए मजबूर हुए क्योंकि वे गुलाम देश को आजाद कराना चाहते थे।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) दोनों, (ख) (ii) हिंदी,

(ग) (i) स्नेहपूर्वक, (घ) (iii) शहर का

(3) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) विक्रमादित्य, (ख) जूँ, (ग) दान-दक्षिणा, (घ) पतंग

(4) इन स्तम्भों को मिलाइए—

श्यामू—उपद्रव मचाया,

सन् 1761—पानीपत का तृतीय युद्ध,

भारतवर्ष—तिलक एवं गाँधी,

बच्चों का मन—इश्वर का स्वरूप।

(5) सही के सामने (✓) व गलत के सामने (×) का चिह्न लगाइए—

(क) (✓), (ख) (✓), (ग) (✓), (घ) (×), (ङ) (✓)

(6) निम्न शब्दों को शुद्ध करके लिखिए—

स्फूर्ति — स्फूर्तिमान

सहनशिलता — सहनशीलता

क्षमाशिल — क्षमाशील

आखीर — आखिर

अधिर — अधीर

दुभर — दूभर

(7) विलोम लिखिए—

विषरहित — विषसहित

विनाश — विकास

उजाड़ना — बसाना

धैर्य — अधैर्य

क्रूरता — दयालुता

सहमत — असहमत

(8) पर्यायवाची लिखिए—

संसार — विश्व

भयभीत — भयहीन

रास्ता — मना

पृथ्वी — धरती

सिंधु — सागर जन्तु — मनुष्य

0000